



CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

डिजिटल युग में बाल साहित्य की प्रासंगिकता

रामनिवास

शोधार्थी (हिंदी विभाग)

श्री बलदेव राम मिश्रा महाविद्यालय नागौर

Email-ramniwasbhambu51@gmail.com, Mobile-9950393511

First draft received: 19.08.2026, Reviewed: 26.08.2026

Final proof received: 29.08.2026, Accepted: 29.09.2026

सारांश

ऐसे तो साहित्य रचना सार्वभौमिक होती है परंतु आयु, बुद्धि, बोध के अलग-अलग स्तरों के आधार पर भी साहित्य रचना की परंपरा विश्व साहित्य में निरंतर पल्लवित होती रही है। बोध के स्तर पर जैसे दार्शनिक साहित्य, आध्यात्मिक साहित्य के रूप में बुद्धि की अन्तश्चेतना को उद्घाटित करता है तथा बुद्धि के स्तर पर वैचारिक साहित्य, वैज्ञानिक साहित्य, राजनैतिक साहित्य व्यक्ति की तर्क शक्ति, विश्लेषात्मक चिंतन को बढ़ाता है एवं आयु के स्तर पर बाल साहित्य, वयस्क साहित्य एवं प्रौढ़ साहित्य व्यक्ति की आयु अनुसार रूचिपूर्ण साहित्य सृजन किया जाता है।

मुख्य शब्द - बाल-साहित्य, आयु, बुद्धि, बोध के स्तर.

Introduction

ऐसे तो साहित्य रचना सार्वभौमिक होती है परंतु आयु, बुद्धि, बोध के अलग-अलग स्तरों के आधार पर भी साहित्य रचना की परंपरा विश्व साहित्य में निरंतर पल्लवित होती रही है। बोध के स्तर पर जैसे दार्शनिक साहित्य, आध्यात्मिक साहित्य के रूप में बुद्धि की अन्तश्चेतना को उद्घाटित करता है तथा बुद्धि के स्तर पर वैचारिक साहित्य, वैज्ञानिक साहित्य, राजनैतिक साहित्य व्यक्ति की तर्क शक्ति, विश्लेषात्मक चिंतन को बढ़ाता है एवं आयु के स्तर पर बाल साहित्य, वयस्क साहित्य एवं प्रौढ़ साहित्य व्यक्ति की आयु अनुसार रूचिपूर्ण साहित्य सृजन किया जाता है।

साहित्य का यही वर्गीकरण हमें बाल साहित्य की परिभाषा एवं अवधारणा की ओर ले जाता है। बाल साहित्य साहित्य का कोई कृत्रिम प्रकार नहीं है अपितु बालक की आयु एवं अवबोध के अनुसार लिखा गया साहित्य है।

बाल साहित्य का अर्थ दीनदयाल शर्मा के शब्दों में "बाल साहित्य से आशय उस साहित्य से है जो बच्चों की आयु, रुचि, समझ, भाषा और मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर रचा गया हो। इसमें कहानियाँ, कविताएँ, गीत, नाटक, एकांकी, संस्मरण, पहेलियाँ, कॉमिक्स, विज्ञान कथाएँ, जीवनी, लोककथाएँ तथा चित्र कथाएँ सम्मिलित होती हैं। बाल साहित्य की भाषा सरल, सरस और संवादात्मक होती है। इसकी कथा वस्तु बच्चों के दैनिक जीवन, कल्पनालोक, जिज्ञासाओं और अनुभवों से जुड़ी होती है।"¹

इस प्रकार, बाल साहित्य मनुष्य की बौद्धिक यात्रा का वह प्रथम सोपान है, जहाँ 'बुद्धि' और 'बोध' का विकास खेल-खेल में, कहानियों, कविताओं और चित्रों के माध्यम से प्रारंभ होता है।

समय के साथ साहित्य के स्वरूप में परिवर्तन होता है। पहले साहित्य मौखिक रूप में ज्यादा प्रचलित था। 19वीं सदी के अंतिम दशकों एवं 20 वीं सदी में साहित्य मौखिक के साथ लिखित रूप में संप्रेषित होने लगा। 21 वीं सदी के दूसरे दशक में साहित्य संचार में व्यापक परिवर्तन होने लगा। साहित्य की जनसामान्य तक पहुंच किताबों, प्रकाशन घरों से बाहर निकलकर डिजिटल माध्यम से होने लगी। यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर आदि के माध्यम से साहित्य का उपभोग होने लगा। बाल साहित्य भी इस बदलाव में कदम मिलाकर आगे बढ़ा। बाल साहित्य पुस्तकों के साथ साथ यूट्यूब वीडियो, एनीमेशन, कार्टून आदि रूपों में परिवर्तित होकर बच्चों के जीवन का हिस्सा बनने लगा।

बाल साहित्य की प्रासंगिकता: आधुनिक डिजिटल युग में भी बाल साहित्य प्रासंगिकता बनी हुई है। इस युग में माध्यम अवश्य बदला है परंतु उपादेयता समय के साथ और बढ़ी है। बाल साहित्य की प्रासंगिकता को हम निम्न बिंदुओं द्वारा समझ सकते हैं -

1. लोक व्यवहार का ज्ञान : बाल साहित्य मात्र मनोरंजन का साधन नहीं है अपितु इसका एक उद्देश्य बालकों को साहित्य के माध्यम से लोक व्यवहार की समझ देना है। "डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार बाल

साहित्य समाज और संस्कृति से बच्चों का प्रथम परिचय है।² बाल साहित्य अपनी कहानियों, कविताओं में समाज एवं संस्कृति के अंश का समावेश करके बालकों को रूबरू करवाता है। पवन पहाड़िया की किताब 'पापा का सपना' की कहानी 'एक अप्रैल का मजाक' लोक व्यवहार के ज्ञान का उपयुक्त उदाहरण है। "इस कहानी में गुड़िया अपने छोटे भाई के गिरने का बहाना बनाकर पापा को फोन करके बुलाती है। पापा दौड़े दौड़े वहां आते हैं तो छोटू को सुरक्षित देखकर गुड़िया को आगे से झूठ बोलने से मना करते हैं परन्तु गुड़िया की नव वर्ष पापा के साथ मनाने की खाहिश सुनकर इनकी खुशियों में शामिल हो जाते हैं।"³ इसके जरिए लेखक ने बच्चों को झूठ नहीं बोलने की सीख के साथ माता पिता को भी बच्चों के साथ समय व्यतीत करने की सीख दी है। अतः इस उदाहरण से हम समझ सकते हैं कि बाल साहित्य लोक व्यवहार का ज्ञान देने में उपयोगी है।

2. शाश्वत जीवन मूल्यों का समावेश : बाल साहित्य की प्रासंगिकता इसलिए भी बनी रहेगी क्योंकि इस साहित्य में शाश्वत जीवन मूल्यों का समावेश है। किसी भी उन्नत समाज की नींव उसके सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों में छुपी होती है। बाल साहित्य सत्य, अहिंसा, करुणा, दया, प्रेम, सद्भाव इत्यादि शाश्वत जीवन मूल्यों का संवाहक है। जब बालक पंचतंत्र, राजा हरिश्चंद्र इत्यादि कहानियों को पढ़ता है तो उनके बाल स्वभाव में ये गुण नैसर्गिक रूप से उतर आते हैं। "पंचतंत्र की कहानी 'सियार और ढोल' हमें यही सीख देती है कि शेखी मारने वाले अंदर से खोखले होते हैं।"⁴ यह सीख पंचतंत्र की रचना के समय भी प्रासंगिक थी और आज भी।

3. सार्वभौमिक उपादेयता : बाल साहित्य की उपदेतपता किसी एक देश या काल तक सीमित नहीं है अपितु यह सार्वभौमिक रूप से विश्व के हर हिस्से हेतु उपयोगी है। पंचतंत्र की कहानियां आज से कई सौ साल पहले लिखी गई थीं परन्तु उन कहानियों के मूल तत्व की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है। बच्चों का स्वभाव दुनिया के किसी भी कोने में निश्चल एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति का होता है। इसलिए बाल साहित्य में निर्मित कल्पना लोक दुनिया के हर हिस्से के साहित्य में समान रूप से प्रासंगिक है।

डिजिटल युग में बाल साहित्य की प्रासंगिकता : डिजिटल युग को केवल बाल साहित्य के विरोधी के रूप में देखना एकांगी दृष्टिकोण होगा। राजस्थान के प्रसिद्ध बाल साहित्यकार पवन पहाड़िया डिजिटल युग में बाल साहित्य की प्रासंगिकता को लेकर कहना है कि "मैं बाल साहित्य के भविष्य को लेकर निराश नहीं हूं। यह जरूर है कि बच्चों की पढ़ने की आदत और उनके मनोरंजन के माध्यम तेजी से बदल रहे हैं। रील, शॉर्ट वीडियो, एनीमेशन और डिजिटल गेम्स बच्चों का ध्यान बहुत तेजी से आकर्षित करते हैं। ऐसे में बाल साहित्य के सामने चुनौती यह है कि वह बच्चों की बदलती रुचियों और नए माध्यमों को समझे।

लेकिन मैं इसे केवल चुनौती के रूप में नहीं देखता। ये माध्यम बाल साहित्य के लिए नई संभावनाएं भी लेकर आए हैं। अच्छी बाल कविताएं, कहानियां और गीत यदि ऑडियो, वीडियो, एनीमेशन या डिजिटल पुस्तकों के रूप में बच्चों तक पहुंचें तो साहित्य का दायरा पहले से कहीं अधिक व्यापक हो सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि माध्यम बदलने के

साथ साहित्य की गुणवत्ता और संवेदनशीलता से समझौता न किया जाए।

मेरा मानना है कि रील साहित्य की जगह नहीं ले सकती और साहित्य भी रील का विकल्प बनने की कोशिश नहीं कर सकता। दोनों के अपने-अपने अनुभव हैं। शॉर्ट वीडियो तत्काल आकर्षित कर सकता है, जबकि साहित्य बच्चे के भीतर कल्पना और विचार की एक लंबी प्रक्रिया शुरू करता है। इसलिए भविष्य में बाल साहित्य को इन दोनों के बीच विरोध खड़ा करने के बजाय नए माध्यमों के साथ संवाद स्थापित करना होगा।

भविष्य का बाल साहित्य शायद केवल मुद्रित पुस्तक तक सीमित नहीं रहेगा। पुस्तक के साथ ऑडियो, डिजिटल संस्करण, एनीमेशन और इंटरैक्टिव माध्यम जुड़ सकते हैं। इससे बच्चों तक पहुंच बढ़ेगी। साथ ही यह भी जरूरी है कि बच्चों में पुस्तक पढ़ने और गंभीरता से सोचने की आदत बनी रहे।

इसलिए मैं बाल साहित्य का भविष्य माध्यम के बदलने में नहीं, बल्कि उसकी भूमिका के बदलने में देखता हूं। माध्यम चाहे प्रिंट हो या डिजिटल, बाल साहित्य का मूल उद्देश्य वही रहेगा—बच्चे की कल्पना को विस्तार देना, उसकी संवेदना को विकसित करना और उसे अपने समाज, प्रकृति, भाषा तथा मानवीय मूल्यों से जोड़ना। यदि हम इस मूल उद्देश्य को बचाए रखते हुए नए माध्यमों को स्वीकार करते हैं, तो बाल साहित्य का भविष्य बहुत संभावनाशील है।"⁵

वास्तव में, यदि हम देखें तो डिजिटल तकनीक ने बाल साहित्य को नए आयाम, व्यापकता और रोचकता प्रदान की है। इसे हम निम्न बिंदुओं से समझ सकते हैं :

1. बाल साहित्य को और अधिक रोचक एवं आकर्षक बनाना : डिजिटल तकनीक ने बाल साहित्य को और अधिक रोचक एवं आकर्षित बना दिया है। टेक्नोलॉजी के नए-नए प्रयोग जैसे 2D या 3D एनीमेशन, कार्टून और अब तो AI वीडियो के द्वारा बाल साहित्य और अधिक रोचक तरीके से प्रस्तुत किया जा रहा है। कई सारे यूट्यूब चैनल हैं जो विशेष कर बच्चों के लिए कविताएं कहानियां इत्यादि अपलोड करते हैं। "Kids one hindi जैसे चैनल जो मनोरंजन के साथ साथ सीख भी देते हैं।"⁶

2. व्यापक पहुंच और वैश्विक उपलब्धता : पारंपरिक रूप से छपने वाली किताबों की एक सीमा होती है। सीमित भौगोलिक पहुंच, मुद्रण संसाधनों की कमी, परिवहन की समस्या जैसी कई सारी समस्याएं हैं, जिनके कारण पुस्तक बालक के पास नहीं पहुंच सकती थी। परन्तु अब डिजिटल माध्यम के माध्यम से एक क्लिक पर बच्चों के पास संपूर्ण विश्व का ऑनलाइन अपलोड बाल साहित्य उपलब्ध है। आज भारत के एक छोटे से गांव में बैठा बच्चा यदि चाहे तो अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक द्वारा लिखा गया बाल साहित्य पढ़ सकता है यह इस युग की सबसे बड़ी देन है।

3. डिजिटल स्टोरीटेलिंग का उभार : डिजिटल स्टोरीटेलिंग ने बाल साहित्य के प्रस्तुतिकरण में क्रांति ला दी है। इसमें केवल पाठ नहीं होता, बल्कि ध्वनि, चित्र, वीडियो और यूजर-इंटरैक्शन का सुंदर मिश्रण होता है। बाल मनोविज्ञान में भी दृश्य साधनों को

सीखने का सबसे बेहतर तरीका बताया है। स्टोरी टेलिंग ऐप जैसे कुकू FM, स्टोरी टेल, यूट्यूब इत्यादि पर बालकों के लिए ऑडियो-वीडियो प्लेटफॉर्म की कहानियां लिखी जा रही है।

4. लोक कथाओं एवं सांस्कृतिक धरोहर का डिजिटल संरक्षण : भारत की मौखिक परंपरा में रची-बसी हजारों क्षेत्रीय लोक कथाएँ, बाल गीत और पहेलियाँ जो धीरे-धीरे विलुप्त हो रही थीं, उन्हें डिजिटल माध्यमों ने नया जीवन दिया है। YouTube चैनलों, पॉडकास्ट और डिजिटल अभिलेखागारों के माध्यम से राजस्थानी, भोजपुरी, मैथिली, गढ़वाली आदि क्षेत्रीय भाषाओं की लोक कथाओं को ऑडियो-विजुअल रूप में संरक्षित किया जा रहा है। यह भावी पीढ़ियों के लिए हमारी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने का एक सशक्त माध्यम बन चुका है।

डिजिटल युग में बाल साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ:

जहाँ एक ओर डिजिटल युग ने कई अवसर दिए हैं, वहीं इसने बाल साहित्य और बाल विकास के सामने अत्यंत गंभीर चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं। इसे निम्न बिंदुओं से स्पष्ट किया गया है -

1. अत्यधिक स्क्रीन टाइम : आज बच्चों का अधिकांश समय स्मार्टफोन, टीवी और कंप्यूटर स्क्रीन के सामने बीत रहा है। अत्यधिक 'स्क्रीन टाइम' के कारण बच्चों में आँखों की कमजोरी, मोटापा, नींद न आना, चिड़चिड़ापन और ध्यान केंद्रित न कर पाने जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। किताबों के शांत पठन से मिलने वाला मानसिक सुकून स्क्रीन की नीली रोशनी और भागदौड़ भरे विजुअल्स में खो गया है।

2. गुणवत्ता की समस्या एवं अवांछित/अश्लील कंटेंट : डिजिटल दुनिया में कंटेंट का कोई प्रभावी सेंसरशिप या गेटकीपिंग नहीं है। YouTube और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर 'बाल साहित्य' या 'बच्चों के कार्टून' के नाम पर अत्यधिक हिंसक, फूहड़, उपभोक्तावादी और अवांछित सामग्री उपलब्ध है। एल्गोरिदम की वजह से बच्चे कब किसी बाल-कथा से भटककर अवांछित विज्ञापनों या अनुचित वीडियो तक पहुँच जाते हैं, इसका पता ही नहीं चलता। यह स्थिति बाल मन पर अत्यंत घातक प्रभाव डाल रही है।

3. डिजिटल विभाजन: "विकिपीडिया के अनुसार डिजिटल विभाजन से तात्पर्य है डिजिटल विभाजन डिजिटल प्रौद्योगिकी तक असमान पहुँच और उसके उपयोग को दर्शाता है, जिसमें तीन परस्पर संबंधित आयाम शामिल हैं: प्रेरणा, भौतिक संसाधन, कौशल और उपयोग तक पहुँच।"⁷

इसे बाल साहित्य के संदर्भ में देखें तो डिजिटल बाल साहित्य का लाभ केवल उन्हीं बच्चों तक सीमित है जिनके पास महंगे स्मार्टफोन, टैबलेट और हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्शन उपलब्ध है। ग्रामीण और आर्थिक रूप से विपन्न वर्गों के बच्चे इस डिजिटल बाल साहित्य से वंचित रह जाते हैं। इस प्रकार, डिजिटल युग ने शिक्षा और साहित्य के उपभोग में अमीर और गरीब के बीच एक नया डिजिटल विभाजन पैदा कर दिया है।

4. प्रकाशित किताबों एवं बाल पत्रिकाओं से मोहभंग : एक चुनौती यह भी है कि डिजिटल आकर्षण के कारण प्रिंटेड बाल पत्रिकाओं और किताबों का बाजार

तेजी से घटा है। ऐतिहासिक बाल पत्रिकाएँ जैसे 'पराग', 'नंदन', 'बालहंस' आदि बंद होने की कगार पर हैं। बच्चों में पत्रों को पलटने, किताबों की खुशबू महसूस करने और अक्षरों पर उँगलियाँ फेरकर पढ़ने का सुख समाप्त हो रहा है। मुद्रित किताबों से मोहभंग होने के कारण बच्चों की भाषा संरचना, वर्तनी शुद्धि और गहन अध्ययन की आदत क्षीण हो रही है, जो अधिक चिंतादायक है।

5. तकनीक पर अति-निर्भरता एवं संवेदनाओं का हास : डिजिटल सामग्री अक्सर व्यावसायिक लाभ के उद्देश्य से बनाई जाती है, जिसमें अति-नाटकीयता, शोर-शराबा और चमकदार एनीमेशन पर जोर होता है। इस प्रक्रिया में कहानी की मौलिक संवेदना, आत्मीयता और गहराई कहीं दब जाती है। त्वरित मनोरंजन की चाह में बच्चा केवल सतह पर तैरता है, कहानी के भीतर छिपी मानवीय संवेदनाओं को महसूस नहीं कर पाता।

6. बेलगाम एवं उच्छृंखल अभिव्यक्ति: डिजिटल माध्यमों पर लाइक्स, व्यूज और वायरल होने की होड़ में बाल साहित्य के नाम पर फूहड़ता, उथलापन और सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाली सामग्री परोसी जा रही है। बेलगाम भाषा और उच्छृंखल विषय-वस्तु बच्चों के नैतिक आचरण को दूषित कर रही है। जिससे उनमें सामाजिक मान मर्यादा, संस्कार आदि जीवन मूल्य संचालित करने वाले पक्ष गौण हो रहे हैं एवं जो एल्गोरिथम द्वारा परोसा जा रहा है वही जानकारी का प्राथमिक स्रोत बनता जा रहा है।

चुनौतियों का समाधान एवं भावी दिशा: उपरोक्त चुनौतियों से निपटने और बाल साहित्य की प्रासंगिकता को डिजिटल युग में भी बनाए रखने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है:

1. सरकार एवं समाज द्वारा नियंत्रण व विनियमन : डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर बच्चों के लिए परोसी जा रही सामग्री का सख्त नियमन होना चाहिए। सरकार को 'साइबर सुरक्षा' के साथ-साथ 'चाइल्ड-फ्रेंडली डिजिटल कंटेंट पॉलिसी' बनानी चाहिए। यूट्यूब Kids जैसे प्लेटफॉर्मों पर कठोर फिल्टर लगाए जाएँ ताकि अवांछित और हिंसक सामग्री बच्चों तक न पहुँचे। समाज और स्वयंसेवी संस्थाओं को भी उत्कृष्ट बाल साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए आगे आना होगा। "मेटा पर अमेरिकी सरकार ने इसलिए 18 बिलियन डॉलर का जुर्माना लगाया है एवं आगे से चाइल्ड फ्रेंडली कंटेंट बनाने के सख्त निर्देश भी दिए। सरकार की ऐसे और सख्त कदम उठाने की आवश्यकता है।"⁸

2. 'हाइब्रिड मॉडल' को अपनाना : यह तो सर्वविदित है कि समाधान डिजिटल तकनीक के पूर्ण बहिष्कार में नहीं, बल्कि 'संतुलन' में है। हमें मुद्रित पुस्तकों और डिजिटल माध्यमों का एक 'हाइब्रिड मॉडल' विकसित करना होगा। किताबों में QR कोड दिए जा सकते हैं, जिन्हें स्कैन करके बच्चा कहानी से संबंधित एनीमेशन या ऑडियो सुन सके। इससे प्रिंट मीडिया का पठन सुख और डिजिटल माध्यम की रोचकता दोनों का समावेश एक साथ संभव हो सकेगा। हालांकि विभिन्न पाठ्यपुस्तक बोर्ड, केंद्र एवं राज्य सरकार कोरोना के बाद इस दिशा में अनेक प्रयास कर रही है।

3.माता-पिता एवं शिक्षक की भूमिका:बालक के जीवन में अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। यदि माता पिता एवं शिक्षक प्रयास करे तो यह डिजिटल क्रांति वरदान बन सकती है। इसलिए लिये कुछ सुझाव है, जो कारगर साबित होंगे -

(१).माता-पिता को बच्चों का स्क्रीन टाइम तय करना चाहिए और उन्हें रोजाना कुछ समय भौतिक किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

(२).माता-पिता को बच्चों के साथ बैठकर कहानियाँ पढ़नी चाहिए या डिजिटल सामग्री देखनी चाहिए, जिससे वे बच्चों को सही और गलत का अंतर समझा सकें।

(३). घरों और विद्यालयों में बाल पुस्तकालयों की स्थापना की जानी चाहिए जहाँ बच्चे किताबों के भौतिक स्पर्श से जुड़ सकें।

4. बाल साहित्यकारों की भूमिका

आधुनिक बाल साहित्यकारों को समय की माँग को समझकर अपने साहित्य को उसी अनुसार बनाना होगा। केवल पारंपरिक लेखन तक सीमित न रहकर अपने साहित्य को ऑडियो बुक, ई-बुक और एनिमेटेड प्रारूपों में ढालने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। साहित्यकारों को आधुनिक बाल-मनोविज्ञान और उनकी बदलती रुचियों को समझते हुए ज्ञानवर्धक और तकनीकी रूप से आकर्षक साहित्य की रचना करनी होगी। ताकि बाल साहित्य की प्रासंगिकता बनी रहे। "राजस्थान के वरिष्ठ साहित्यकार दीनदयाल शर्मा टाबर टोली पत्रिका के प्रकाशन के साथ फेसबुक, यूट्यूब पर बाल रचनाओं का पठन वचन द्वारा उन्हें आकर्षक रूप में पेश कर रहे हैं।" अन्य साहित्यकारों को भी इसी तरह आगे आना चाहिए।

निष्कर्ष: समग्र विश्लेषण के पश्चात यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है कि डिजिटल युग में भी "बाल साहित्य प्रासंगिक था, प्रासंगिक है, और सदैव प्रासंगिक रहेगा।" डिजिटल क्रांति ने बाल साहित्य के केवल 'माध्यम' को बदला है, उसकी 'आत्मा' को नहीं। शब्द चाहे कागज के पन्नों पर छपे हों या किसी स्मार्टफोन की स्क्रीन पर हो, बाल मन को गढ़ने, उसमें करुणा, साहस, नैतिक मूल्य और लोक-व्यवहार का बीजारोपण करने का जो कार्य बाल साहित्य करता है, उसका कोई अन्य विकल्प नहीं हो सकता।

डिजिटल युग की चुनौतियाँ अवश्य गंभीर हैं जैसे स्क्रीन टाइम का बढ़ना या गुणवत्ताहीन सामग्री की भरमार। परंतु यदि समाज, सरकार, माता-पिता, शिक्षक और साहित्यकार मिलकर एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाएँ, तो यही डिजिटल युग बाल साहित्य के विस्तार और संरक्षण का सबसे बड़ा हथियार बन सकता है। बाल साहित्य रूपी यह अमूल्य धरोहर युगों-युगों तक बाल मन को ज्ञान से आलोकित करती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ:

1. दीनदयाल शर्मा, बाल साहित्य और बच्चे, संपर्क प्रकाशन, हनुमानगढ़, 2026।
2. दीनदयाल शर्मा, बाल साहित्य और बच्चे, संपर्क प्रकाशन, हनुमानगढ़, 2026।
3. पवन पहाड़िया, पापा का सपना, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2026।

4. विष्णु वर्मा, पंचतंत्र, अमित पॉकेट बुक्स, दिल्ली, 2025।

5. पवन पहाड़िया, लेखक के साथ साक्षात्कार, 28 अगस्त 2026।

6. Rössler, Patrick; Hoffner, Cynthia A.; Zoonen, Liesbet, eds. (2017-03-29). The International Encyclopedia of Media Effects (1 ed.)

7. <https://newsonair.gov.in/meta-to-pay-18-billion-us-dollars-add-stronger-child-safety-measures-to-facebook-instagram-platforms/>

8. Deendayal Sharma | Facebook
<https://share.google/O8HtkCO16J2w5twia>